IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिंदी कहानियों में ग्रामीण जीवन का चित्रण

डॉ. राजेश आरदवाड

सहयोगी प्राध्यापक

प्रमिलादेवी पाटील कला व विज्ञान महाविद्यालय, नेकनूर ता. जि. बीड

सारांश

महात्मा गांधीजीके विचारधारासे गाँवों के विकास से देश का विकास हो सकता है। क्योंकी भारतदेश गाँवों से बना है। भारतीय जीवन का मुल ग्रामीण संस्कृती में छुपा है। यदि भारत की मूल संस्कृति अध्ययन करना है तो वह गॉवो और ग्रामीण जीवनसेही करना पडेगा। भारतीय गाँव सिर्फ गाँव ही नहीं बल्कि भारतीय समाज की जीवन शैली है। ग्रामीण जीवन भारतीय समाज का दर्पण है। प्रारंभिक काल मे प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में ग्रामीण जीवन का चित्रण किया है। प्रेमचंदजी के बाद ग्रामीण जीवन पर लिखे जानेवाले प्रमुख कहानीकारों में मार्कण्डेय, भैरव प्रसाद गुप्त, विवेकी राय, शिवप्रसाद सिंह, आदि कहानीकारों के नाम सामने आते है। कहानीकारों ने अपनी कहानी गाँवों में जमीनदारी और अत्याचार, अभावग्रस्तता तथा आर्थिक विषमता, गाव में राजनीतिकी स्थिती, बदलता ग्राम जीवन, विकास योजनाओं का परिणाम, ग्रामीण विषमता और गरिबी, नारी कि दुर्गती, कृषक और मजदूर उपेक्षित वर्ग, अंधविश्वास का विरोध, ग्रामीण परंपरागत रिती रिवाज में बदलाव, गाव के जीवन में शहरी जीवन का संक्रमण, ग्रामीण निम्नवर्गीय लोगों के समस्या आदी छोठे छोठे ग्रामीण पहलूओं का वर्णन किया है।

मुख्य शब्द : हिंदी कहानी, ग्रामीण जीवन

महात्मा गांधीजीके विचारधारासे गाँवों के विकास से देश का विकास हो सकता है। क्योंकी भारतदेश गाँवों से बना है। भारतीय जीवन का मुल ग्रामीण संस्कृती में छुपा है। यदि भारत की मूल संस्कृति अध्ययन करना है तो वह गॉवो और ग्रामीण जीवनसेही करना पडेगा। भारतीय गाँव सिर्फ गाँव ही नहीं बल्कि भारतीय समाज की जीवन शैली है। ग्रामीण जीवन भारतीय समाज का दर्पण है।

प्रारंभिक काल मे प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में ग्रामीण जीवन का वर्णन किया है। किसान अपने जीवनभर श्रम कर करभी रोटी की चिंता में जिंदगी गुजार देता है। यही भारतीय ग्रामीण जीवन की तस्वीर है। प्रेमचंदजी के बाद ग्रामीण जीवन पर लिखे जानेवाले प्रमुख कहानीकारों में मार्कण्डेय, भैरव प्रसाद गुप्त, विवेकी राय, शिवप्रसाद सिंह आदि कहानीकारों के नाम सामने आते है।

कहानीकारों ने हिंदी कहानी में जमीनदारी और अत्याचार, अभावग्रस्तता तथा आर्थिक विषमता, गाव में राजनीतिकी स्थिती, बदलता ग्राम जीवन, विकास योजनाओं का परिणाम, ग्रामीण विषमता और गरिबी, नारी कि दुर्गती, कृषक और मजदूर उपेक्षित वर्ग, अंधविश्वास का विरोध, ग्रामीण परंपरागत रिती रिवाज में बदलाव, गाँव के जीवन में शहरी जीवन का संक्रमण, ग्रामीण निम्नवर्गीय लोगों के समस्या आदी ग्रामीण पहलूओं का वर्णन किया है। हिंदी के प्रमुख कहानीकारों ने किया ग्रामीण जीवन का चित्रण लेख में प्रस्तुत किया है।

मार्कण्डेय

मार्कण्डेय के कहानियाँ में गाँव कि रचना तथा समस्यायों के विश्लेषण किया हैं। पानफूल, हंसा जाई अकेला, महुए का पेड़,भूदान, माही, सहज और शुभ, बीच के लोग, हलयोग, आदी इनके कई कहानी-संग्रह प्रसिद्ध हैं। इनकी यह कहानियाँ में ग्रामीण जीवन के मानवीय सबंध, ग्रामीण जीवन मी अंधविश्वास और कुसंस्कार, मनुष्य और पशू के सबंध, ग्रामीण स्त्री कि सामाजिक स्थिती और लढाई, नारी जीवन और दुर्गती, ग्रामीण पारिवारिक जीवन कि जटिलता, गाव के पारंपारिक व्यवहार, ग्रामीण जीवन में होनेवाले विकास कार्ये के नामपर खेतिहर मजदूरों का शोषण, ग्रामीण भाग में आनेवाली समस्या और राजनीतिक भ्रष्टाचार आदी पहलूओं का वर्णन किया है।

भैरव प्रसाद गुप्त

भैरव प्रसाद गुप्त हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण साहित्यकार है। उनकी कहानी में ग्रामीण व नागरी जीवन के विविध पहलूओं का वर्णन किया है। तथापि उनकी कहानी में ग्रामीण जीवनपर जादा वर्णन दिखाई देता है। उनकी धनिया कि साडी, डाकूओं का सरदार, मंगली की टिकुली, न्याया खाता, कदम के नीचे आदि कहानी में ग्रामीण जीवन के विविध अंग का वर्णन किया है। भैरव प्रसाद गुप्त ने अपनी कहानी में ग्रामीण निम्नवर्गीय लोगों के समस्याओं वर्णन किया है।

विवेकी राय

विवेकी राय का ग्रामीण जीवन में लगा मन ग्रामीण जीवन के छोठे छोठे पहलूओं का वर्णन किया है। मंगल भवन, नममी ग्राम, देहरी के पार, सर्कस, सोना माटी, कलातीत, गूंगा जहाज, पुरुष पुरान, समर शेष है, आम रास्ता नहीं है, आंगन के बंधनवार, आस्था और चिंतन, अतिथि, बबूल, जीवन अज्ञान का गणित है,लौटकर देखना, लोकरिन,मेरे शुद्ध श्रद्धेय, मेरी तेरह कहानियाँ, सवालों के सामने, श्वेत पत्र, ये जो है गायत्री आदी कहानी संग्रह प्रसिद्ध हैं।

विवेकी राय का जन्म गाँव में एक कृषक परिवार में हुआ है। इस कारण से वह अपने रचनाओं में गाँव को प्रमुख मानकर रचनाएँ की है। भारत एक कृषि प्रधान देश है और गाँव में रहने वाले लोग कृषि को अपना प्रमुख आधार मानते हैं। उनकी कहानी में जमीनदारी और अत्याचार, गरिबी, अभाव ग्रस्तता तथा आर्थिक विषमता, गाव में राजनीतिकी स्थिती, बदलता ग्राम जीवन, विकास योजनाओं का परिणाम आदी ग्रामीण समस्याओं का वर्णन किया है। विवेकी राय ने अपनी कहानी में गाँव में रहनेवाले लोगों पर और वहाँ की समस्याओं का चित्रण किया है। उसके साथ आज का गाँव के नवयुवक शहर की ओर किस प्रकार आकर्षित हुए हैं इस सभी का चित्रण किया है। उनकी कहानी में ग्रामीण मन कि संवेदना और ग्रामीण लोगोकी समस्या विशेष रूप से स्पष्ट किया है।

शिवप्रसाद सिंह

डॉ. शिवप्रसाद सिंह का नाम ग्रामीण रचनाकार के रूप विशेष लिया जाता है। डॉ. शिवप्रसाद सिंह को नन्हों और दादी माँ जैसी कहानियों के कारण भरपूर प्रतिष्ठा मिली। इन कहानियों के साथ ही आरपार कि माला, धरातल, बेहया, कर्मनाशा की हार, मुर्दासराय, इन्हें भी इंतजार है, मेरी प्रिय कहानिया, मुर्गे ने बांग ,अंधकूप, भेडीए, अमृता, उपधाइन मैना आदि कहानियाँ भी प्रसिद्ध है।

डॉ. शिवप्रसाद सिंह यह कहानियाँ में ग्रामीण गरिबी, नारी कि दुर्गती, कृषक और मजदूर उपेक्षित वर्ग, अंधविश्वास का विरोध, ग्रामीण परंपरागत रिती रिवाज में बदलाव, गाव के जीवन में शहरी जीवन का संक्रमण आदी ग्रामीण मुल्यों का वर्णन किया है।

निष्कर्ष :

मार्कण्डेय, विवेकी राय, भैरव प्रसाद गुप्त, शिवप्रसाद सिंह आदि कहानीकारों अपनी अपनी कहानियों में ग्रामीण जीवन का चित्रण किया है। उनकी कहानी से ग्रामीण जीवन के विविध पह्लू और समस्याओं का आकलन हो जाता है।

मार्कण्डेय के कहानी में इनकी यह कहानियाँ में ग्रामीण जीवन के मानवीय सबंध, ग्रामीण जीवन मी अंधविश्वास और कुसंस्कार, मनुष्य और पशू के सबंध, ग्रामीण स्त्री कि सामाजिक स्थिती और लढाई, नारी जीवन और दुर्गती, ग्रामीण पारिवारिक जीवन कि जटिलता, गाव के पारंपारिक व्यवहार, ग्रामीण जीवन में होनेवाले विकास कार्ये के नामपर खेतिहर मजदूरों का शोषण, ग्रामीण भाग में आनेवाली समस्या और राजनीतिक भ्रष्टाचार आदी पह्लूओं का वर्णन किया है।

विवेकी राय का ग्रामीण जीवन में लगा मन ग्रामीण जीवन के छोठे छोठे पह्लूओं का वर्णन किया है। विवेकी राय के कहानी में जमीनदारी और अत्याचार, गरिबी, अभावग्रस्तता तथा आर्थिक विषमता, गाव में राजनीतिकी स्थिती, बदलता ग्राम जीवन, विकास योजनाओं का परिणाम आदी ग्रामीण समस्याओं का वर्णन किया है। विवेकी राय ने अपनी कहानी में गाँव में रहनेवाले लोगों पर और वहाँ की समस्याओं का चित्रण किया है। उसके साथ आज का गाँव के नवयुवक शहर की ओर किस प्रकार आकर्षित हुए हैं इस सभी का चित्रण किया है। उनकी कहानी में ग्रामीण मन कि संवेदना और ग्रामीण लोगोकी समस्या विशेष रूप से दिखाई देती है।

भैरव प्रसाद गुप्त के कहानी में ग्रामीण जीवनपर जादा वर्णन दिखाई देता है। उनकी धनिया कि साडी, डाकूओं का सरदार, मंगली की टिकुली, न्याया खाता, कदम के नीचे आदि कहानी में ग्रामीण जीवन के विविध अंग का वर्णन किया है। भैरव प्रसाद गुप्त ने अपनी कहानी में ग्रामीण निम्नवर्गीय लोगों के समस्याओं वर्णन किया है। डॉ. शिवप्रसाद सिंह के कहानियाँ में ग्रामीण विषमता और गरिबी, नारी कि दुर्गती, कृषक और मजदूर उपेक्षित वर्ग, अंधविश्वास का विरोध, ग्रामीण परंपरागत रिती रिवाज में बदलाव, गाव के जीवन में शहरी जीवन का संक्रमण आदी का वर्णन किया है।

संदर्भ :

१. डॉ. राजेंद्र कुमार (१९८८), स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानियों में ग्रामीण जीवन और संस्कृति, परिमल प्रकाशन , दिल्ली

२. डॉ विवेकी राय (१९९९), हिन्दी कहानी समीक्षा और संदर्भ, एकता प्रकाशन, इलाहाबाद

३. भैरव प्रसाद गुप्त (१९८६), मेरी कहानियाँ, दिशा प्रकाशन, दिल्ली

४. मार्कण्डेय (२००२), मार्कण्डेय के कहानियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

५. कामेश्वर प्रसाद सिंह (१९८५), कथाकार : शिवप्रसाद सिंह , संजय बुक सेंटर , वाराणसी

६. गोपाल राय (२०१४) हिन्दी कहानी का इतिहास , राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली

७. पंकज यादव और डॉ प्रमोद कुमार सिंह (२०१८), हिन्दी कथा – साहित्य में किसान और ग्रामीण जीवन तथा समस्याए, इंटरनशनल जर्नल ऑफ इंवेव्टीह सोशल सायन्स अंड ह्युमिनिटीस रिसर्च, ५ (१)

८. शोभा चौहान (२०१६), साहित्य और ग्रामीण जीवन, शब्द –ब्रम्ह भारतीय भाषाओं की अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका ४(१)

९. उषा बगेडिया (२०१६), हिंदी कथा साहित्य और ग्रामीण जीवन, शब्द –ब्रम्ह भारतीय भाषाओं की अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका ४(१)